



एक जैसे या अलग-अलग?

Author: Roopa Pai

Illustrator: Rohit Kelkar

Translator: Meera Hadap

पठन स्तर ३



मम्मी ने नन्ही गौरैया के बस्ते में उसका खाने का डिब्बा रखा और बड़े प्यार से उसे अपने पंखों में भर लिया।

"ओ मेरी बेटू, मन लगा कर पढ़ना, सब से अच्छी तरह बात करना, खुशी-खुशी घर आना ..."

"अरे अम्मा!" नन्ही गौरैया हँस पड़ी।
"तुम रोज़ यही बात कहती हो!"

"और हाँ, याद रखना," मम्मी आगे बोलीं। "सँपोले से दूर ही रहना - वो हमारे जैसा नहीं है।"

गौरैया को लगा, मम्मी को ऐसा नहीं कहना चाहिए था। आखिर सँपोला उसका सबसे अच्छा दोस्त था। पर मम्मी को वह बिल्कुल पसन्द नहीं था।

"उसके परिवार वाले हमारे परिवार वालों को खा जाते हैं!" वह हमेशा कहती थीं। **"गौरैया और साँपों की दोस्ती कभी नहीं हो सकती।"**





वहीं शहर के एक दूसरे कोने में, सँपोले के पापा उसके खाने के डिब्बे में गौरैया के अण्डे रख रहे थे।

"आज का खाना तो बहुत ही खास है बेटा!" उन्होंने शान से कहा।

"मगर पापा, मुझे अण्डे बिल्कुल अच्छे नहीं लगते," सँपोले ने परेशान होकर कहा।

"हमारे परिवार में यह हमेशा से खाए जाते रहे हैं!" पापा ने ज़रा सख्ती से कहा।
"अब चलो पाठशाला जाओ। और हाँ, याद रखना, नन्ही गौरैया से दूर ही रहना!"

गुस्सा तो उसे बहुत आया पर सँपोला चुपचाप रेंगता हुआ बाहर निकल गया।

"गौरैया हमसे बहुत अलग होती हैं," पापा ने आवाज़ ऊँची करके कहा। **"और फिर, साँप अगर गौरैया से दोस्ती करेगा तो खाएगा क्या?"**



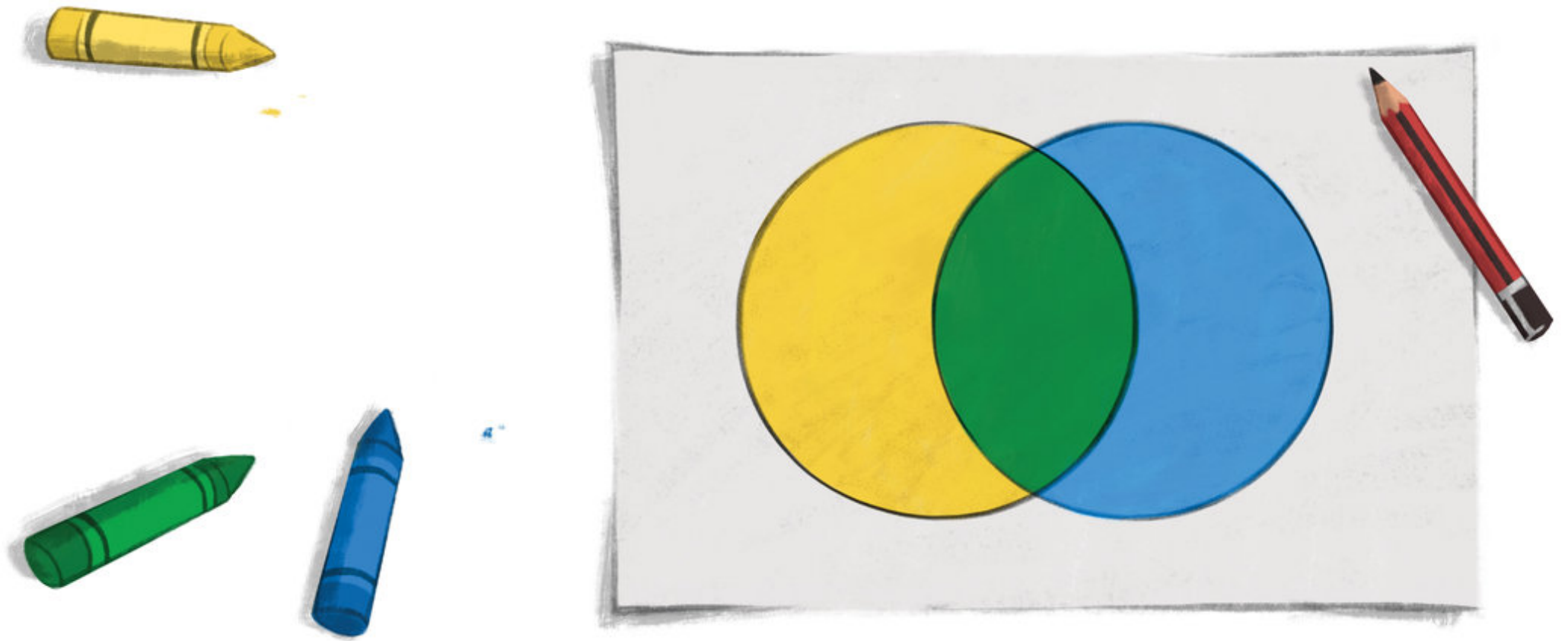


पाठशाला में जब नन्ही गौरैया और सँपोला मिले, तो एक दूसरे की उतरी हुई शक्ल देखकर समझ गए।

"क्या तुम्हारी मम्मी ने आज भी वही बात बोली...?" सँपोले ने पूछा।

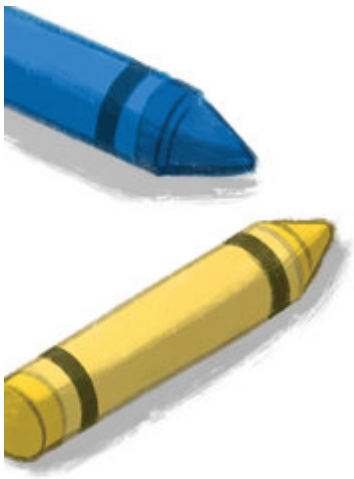
नन्ही गौरैया ने हाँ में सिर हिला दिया। "तुम्हारे पापा ने भी?" सँपोले ने भी हाँ में सिर हिला दिया।

"पर हमारे मम्मी पापा गलत हैं नन्ही गौरैया," सँपोला बोला।
"आओ उन्हें दिखा दें कि हम अलग-अलग होने के बावजूद एक जैसे हैं।"



नन्ही गौरैया यह सुनकर खुश हो गई। "हाँ, हाँ, चलो दिखाते हैं!"

उसने एक कागज़ निकाला और उस पर दो गोले बनाए - इस तरह।



"बाँयें गोले के पीले भाग में," नन्ही गौरैया ने समझाया, "हम सिर्फ़ गौरैया से जुड़ी बातें लिखेंगे। और दाँयें गोले के नीले भाग में, सिर्फ़ साँप से जुड़ी बातें। यह वह बातें होंगी जिनमें साँप और गौरैया एक दूसरे से अलग-अलग हैं।"

पर सँपोले को यह बात कुछ समझ नहीं आई। "मुझे तो लगा हम लोग वह बातें लिखने जा रहे हैं, जिनमें हम दोनों एक जैसे हैं!"

"अरे बीच के हरे भाग में हम वही तो लिखेंगे," नन्ही गौरैया धीमे से मुस्कुरा कर बोली।



"आओ पहले सोचें कि हम दोनों दिखने में कैसे हैं," नन्ही गौरैया बोली। "एक जैसे या अलग-अलग?"

"बहुत-बहुत अलग," सँपोले ने गहरी साँस भरते हुए कहा। "मैं लम्बा हूँ, पतला हूँ और मेरे शरीर पर बाल भी नहीं हैं। तुम छोटी सी हो, मोटी सी हो और कितनी नरम-नरम।"

"तुमने सही कहा," नन्ही गौरैया बोली। "मैं रुई का एक गोला लगती हूँ," उसने पीले भाग में रुई का एक गोला बनाया, "और तुम एक खुरदरी-सी रस्सी जैसे।" नीले भाग में उसने एक रस्सी बनाई।





"अब बताओ," वह बोली, "क्या हमारी चाल एक जैसी है?"

"नहीं, बहुत अलग" सँपोला और उदास हो गया। "तुम हवा में उड़ती हो, अपने पँख फड़फड़ाकर। मैं ज़मीन पर रेंगकर आगे बढ़ता हूँ, आड़ा-तिरछा।"

"यानि यूँ समझ लो," नन्ही गौरैया बोली, "मैं करती हूँ हवा की सवारी, तुम चलते जैसे छुक-छुक गाड़ी।"



सँपोले ने गेहरी साँस भरी।

"ओहो सँपोले, थोड़ा तो मुस्कुराओ," नन्ही गौरैया ने आवाज़ में जोश भरते हुए कहा। "अच्छा बताओ, हम दोनों खाते क्या हैं?"

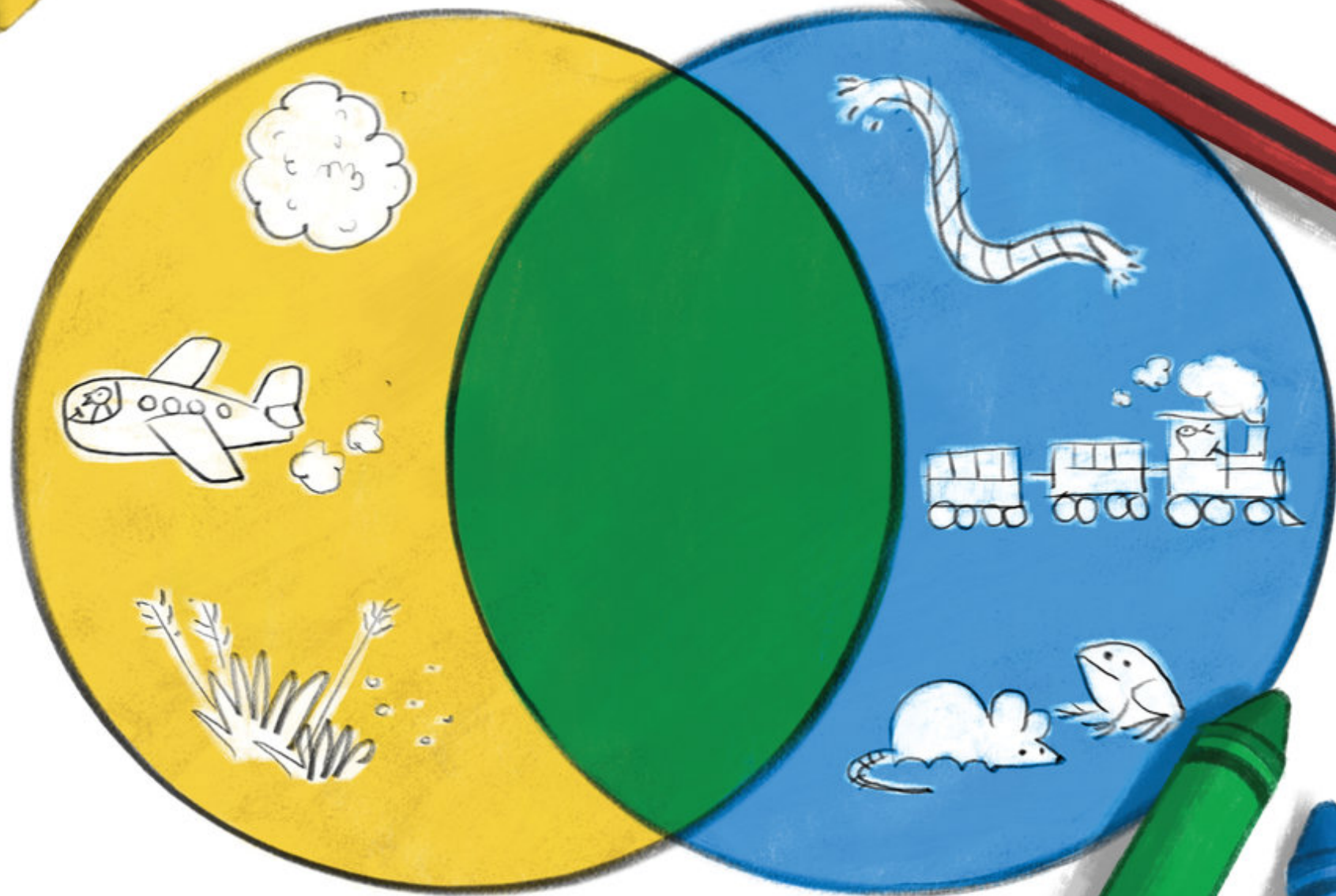
"बहुत अलग-अलग चीज़ें," यह बोलते हुए सँपोले की आँखों में पानी भर आया। "पर मैं चिड़िया के अंडे नहीं खाता।"



"मैं जानती हूँ सँपोले," नन्ही गौरैया ने उसे शान्त करते हुए कहा।
पर अब तो उसका भी मुँह थोड़ा उतर गया था।

"बीज और घास," पीले भाग में उनका चित्र बनाते हुए वह धीरे
से बुदबुदाई।

"मेंढक और चूहे," नीले भाग में उनका चित्र बनाते हुए उसने
कहा।



"चींsssहँsss!!!"

सँपोला और नन्ही गौरैया चौंक गए। पीछे हैडमास्टर हाथी जी खड़े थे।

"इतने उदास क्यों हो बच्चों?" उन्होंने प्यार से पूछा।

"ऊँ ऊँ ऊँ... सर जी," सँपोला रोने लगा। "मेरे पापा और नन्ही गौरैया की मम्मी कहते हैं कि हम दोनों दोस्त नहीं बन सकते, क्योंकि हम दोनों अलग-अलग हैं।"

"सर, हम उन्हें दिखाना चाहते थे कि हम अलग-अलग होने के बावजूद एक जैसे हैं," नन्ही गौरैया ने कहा। "पर देखिए ना, इस तरह हम बता नहीं पा रहे हैं।"

हैडमास्टर हाथी जी ने गोलों को ध्यान से देखा और थोड़ी देर देखते रहे। फिर अचानकउनको हँसी आ गई।

सँपोला और नन्ही गौरैया उन्हें देखने लगे। उन्हें समझ नहीं आया कि हैडमास्टर जी हँस क्यों रहे थे?

"देखो बच्चों," उन्होंने किसी तरह अपनी हँसी रोक कर कहा, "तुम इसे सही ढँग से नहीं कर रहे। हम ज़रा मिल कर यह काम करते हैं।"



हैडमास्टर हाथी जी पहले आराम से बेंच पर बैठ गए।

"अच्छा, पहले तुम बताओ सँपोले," उन्होंने पूछा, "तुम्हें क्या करना सबसे ज़्यादा अच्छा लगता है?"

"खेलना और गप्पें मारना सर," सँपोले ने बताया। "खासकर नन्ही गौरैया के साथ।"

"और तुम्हें नन्ही गौरैया?"

"गप्पें मारना और खेलना सर," नन्ही गौरैया ने कहा। "खासकर सँपोले के साथ।"

"अच्छा, यानि तुम दोनों को एक जैसी चीज़ें करना पसन्द है।"

और उन्होंने हरे अंडाकार भाग में एक चित्र बनाया।

"अच्छा अब बताओ," हैडमास्टर हाथी जी ने आगे पूछा, "तुम दोनों खुश कब होते हो?"

"जब टीचर जी मुझे अपने दोस्त के पास बैठने देती हैं सर," यह कहकर सँपोला मुस्कुराने लगा।

"मैं भी, मैं भी सर," नन्ही गौरैया ने ताली बजाते हुए कहा।





"वाह!" हैडमास्टर हाथी जी बोले। "तुम दोनों एक जैसी जगह पर खुश होते हो। यानि, हरे भाग में!"

"अच्छा अब बताओ सँपोले और नन्ही गौरैया, कौन सी बात तुम्हें दुखी करती है?"

"सर, जब पापा कहते हैं कि नन्ही गौरैया से दूर रहना," सँपोले ने लम्बी साँस लेते हुए कहा।

"सर, जब मम्मी कहती है कि संपोले से दूर रहना," नन्ही गौरैया ने भी लम्बी साँस लेते हुए कहा।

हैडमास्टर हाथी जी सोच में पड़ गए। "तो तुम दोनों एक जैसी वजह से दुखी होते हो - तुम्हारे मम्मी पापा तुम्हें अपने दोस्त चुनने नहीं देते। हरे भाग में!"



"अब बताओ," हैडमास्टर हाथी जी ने आगे कहा,
"एक अच्छा दोस्त कैसा होना चाहिए?"

"जो हमें प्यार करे...," सँपोले ने बोलना शुरू किया।

"...चाहे हम उससे अलग ही क्यों न हों," नन्ही गौरैया ने उसकी बात पूरी की।

"तो तुम दोनों यह मानते हो," हैडमास्टर हाथी जी ने कहा, "कि एक सच्चा दोस्त हर हाल में आपको प्यार करता है। अब यह देखिए, चार बातों में आप एक जैसे हैं और सिर्फ़ तीन बातों में अलग। यानि, आप में ज़्यादातर बातें एक जैसी हैं!"



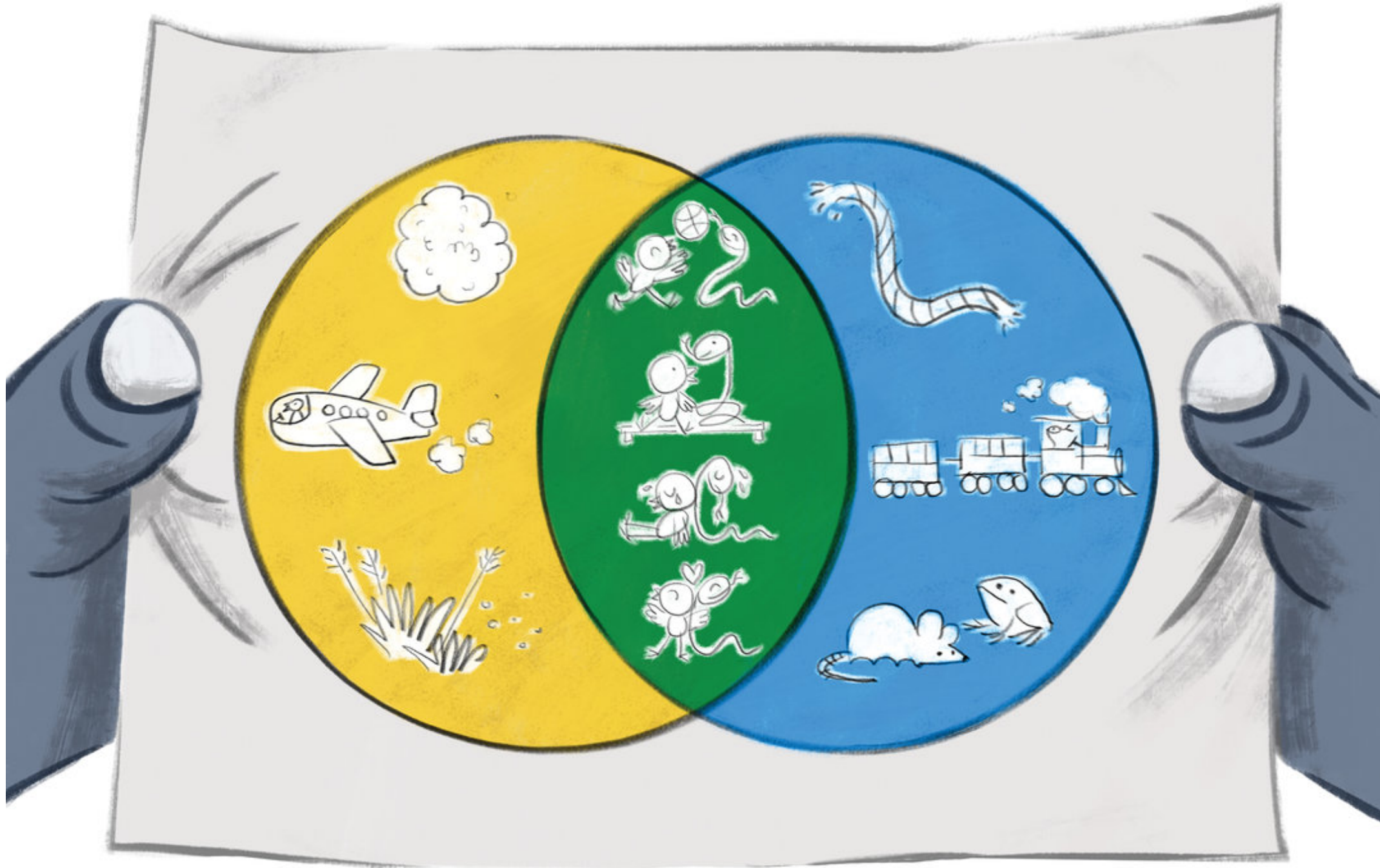
"अरे वाह!" सँपोला और नन्ही गौरैया खुशी से उछल पड़े। "धन्यवाद, हैडमास्टर हाथी जी!"

"चींsssहाँsss!!!" हैडमास्टर हाथी जी बोले। "अच्छा, एक आखिरी बात..."

"जी, सर?"

"अपने मम्मी पापा को बोलना मुझे दफ़्तर में आकर मिलें। कल सुबह!"

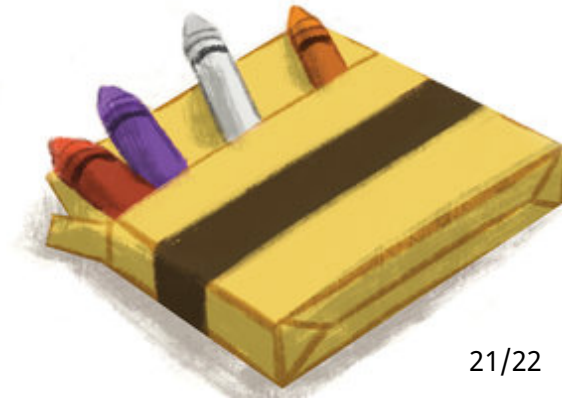
यह कहकर हैडमास्टर हाथी जी दनदनाते हुए चल दिए। वह काफ़ी नाराज़ लग रहे थे।



वर्गों में बाँट कर दिखाइये!

गणित में वर्गीकरण और समूहीकरण का बहुत महत्व है। वस्तुओं का वर्गीकरण करने के लिये, कुछ मूल प्रश्न पूछने पड़ते हैं। जैसे:

1. कौन सी वस्तुएँ एक जैसी हैं? कौन सी वस्तुएँ एक दूसरे से अलग हैं?
2. एक जैसी वस्तुओं में क्या समानता है? एक दूसरे से अलग वस्तुओं में क्या भिन्नता है? यानि वो कैसे एक दूसरे से अलग हैं?
3. क्या एक जैसी वस्तुओं का समूहीकरण एक से ज़्यादा तरह किया जा सकता है?





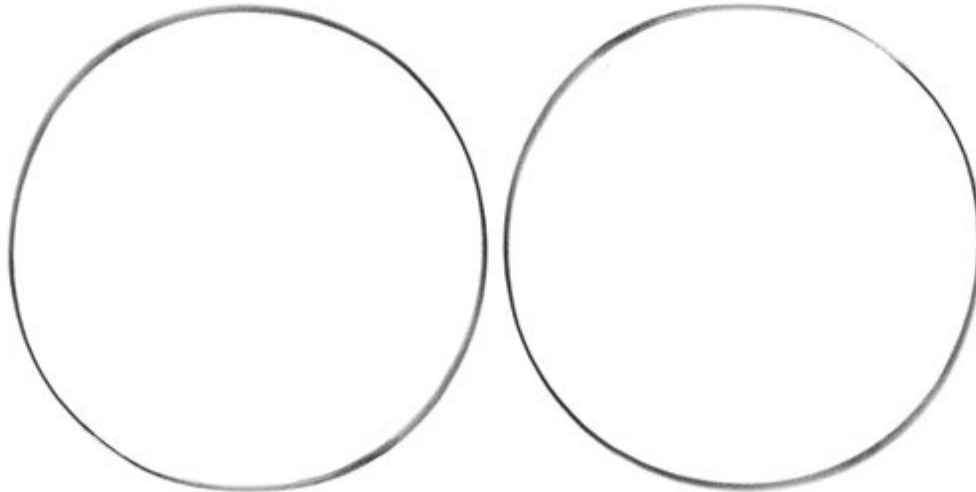
अब सोच कर बताइए कि इन खिलौनों को आप किन-किन वर्गों में बाँटकर, उनके अलग-अलग समूह बना सकते हैं। उदाहरण के लिए:

- उनके **रंगों** के हिसाब से - नीले जानवरों के समूह को एक गोले में और पीले को दूसरे गोले में।

- उनके **नाप** के हिसाब से - छोटे जानवर एक गोले में, बड़े जानवर दूसरे गोले में।

- उनकी **चाल** के हिसाब से - जो जानवर जमीन पर चलते हैं उन्हें एक गोले में, जो हवा में उड़ते हैं उन्हें दूसरे गोले में।

क्या इन सभी प्रकार से अलग-अलग तरह के समूह बनेंगे? बना कर देखिए!



Story Attribution:

This story: एक जैसे या अलग-अलग? is translated by [Meera Hadap](#). The © for this translation lies with Pratham Books, 2017. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Based on Original story: '[Same-same or Different?](#)', by [Roopa Pai](#). © Pratham Books, 2017. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license.

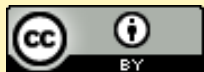
Other Credits:

This book was first published on StoryWeaver by Pratham Books. The development of this book has been supported by Oracle. Art Director: Kaveri Gopalakrishnan

Images Attributions:

Cover page: [A snake and a sparrow drawing and colouring together](#) by [Rohit Kelkar](#) © Pratham Books, 2017. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 2: [Mother and baby sparrow](#), by [Rohit Kelkar](#) © Pratham Books, 2017. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 3: [A sparrow](#), by [Rohit Kelkar](#) © Pratham Books, 2017. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 4: [An adult snake offering eggs to a young snake](#), by [Rohit Kelkar](#) © Pratham Books, 2017. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 5: [Worried snake](#), by [Rohit Kelkar](#) © Pratham Books, 2017. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 6: [A snake and a sparrow in conversation](#) by [Rohit Kelkar](#) © Pratham Books, 2017. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 7: [Drawing circles](#), by [Rohit Kelkar](#) © Pratham Books, 2017. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 8: [Crayons](#), by [Rohit Kelkar](#) © Pratham Books, 2017. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 9: [Semi-circles](#), by [Rohit Kelkar](#) © Pratham Books, 2017. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 10: [A sparrow writing and a snake watching](#), by [Rohit Kelkar](#) © Pratham Books, 2017. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license.

Disclaimer: https://www.storyweaver.org.in/terms_and_conditions



Some rights reserved. This book is CC-BY-4.0 licensed. You can copy, modify, distribute and perform the work, even for commercial purposes, all without asking permission. For full terms of use and attribution, <http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/>

The Oracle logo, which consists of the word "ORACLE" in a white, uppercase, sans-serif font, centered within a red rectangular background.

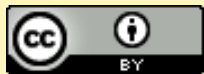
The development of this book has been supported by Oracle.

This book was made possible by Pratham Books' StoryWeaver platform. Content under Creative Commons licenses can be downloaded, translated and can even be used to create new stories - provided you give appropriate credit, and indicate if changes were made. To know more about this, and the full terms of use and attribution, please visit the following [link](#).

Images Attributions:

Page 11: [A sad snake](#) by [Rohit Kelkar](#) © Pratham Books, 2017. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 12: [A worried sparrow](#) by [Rohit Kelkar](#) © Pratham Books, 2017. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 13: [Circles with tiny drawings](#), by [Rohit Kelkar](#) © Pratham Books, 2017. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 15: [An elephant, a sparrow and a snake on a bench](#) by [Rohit Kelkar](#) © Pratham Books, 2017. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 16: [A snake and a sparrow playing](#), by [Rohit Kelkar](#) © Pratham Books, 2017. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 17: [Bird and snake](#), by [Rohit Kelkar](#) © Pratham Books, 2017. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 18: [Sparrow and Snake as friends](#), by [Rohit Kelkar](#) © Pratham Books, 2017. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 19: [A sparrow and a snake hugging each other](#) by [Rohit Kelkar](#) © Pratham Books, 2017. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 20: [Patterns of similarity and dissimilarity](#), by [Rohit Kelkar](#) © Pratham Books, 2017. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 21: [Crayon box](#), by [Rohit Kelkar](#) © Pratham Books, 2017. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 22: [Toy animals](#), by [Rohit Kelkar](#) © Pratham Books, 2017. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license.

Disclaimer: https://www.storyweaver.org.in/terms_and_conditions



Some rights reserved. This book is CC-BY-4.0 licensed. You can copy, modify, distribute and perform the work, even for commercial purposes, all without asking permission. For full terms of use and attribution, <http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/>

The Oracle logo, featuring the word "ORACLE" in a white, uppercase, sans-serif font on a red rectangular background.

The development of this book has been supported by Oracle.

एक जैसे या अलग-अलग?

(Hindi)

क्या आपकी दोस्ती सिर्फ़ ऐसे लोगों से हो सकती है जो आपके जैसे हैं? क्या आपका सबसे अच्छा दोस्त आपसे अलग नहीं हो सकता? इस कहानी में, जैसे सँपोले और नन्ही गौरैया ने बहुत सोच-समझकर इन सवालों के जवाब ढूँढ निकाले, वैसे ही आप भी अपने जवाब ढूँढ निकालिये।

This is a Level 3 book for children who are ready to read on their own.



Pratham Books goes digital to weave a whole new chapter in the realm of multilingual children's stories. Knitting together children, authors, illustrators and publishers. Folding in teachers, and translators. To create a rich fabric of openly licensed multilingual stories for the children of India and the world. Our unique online platform, StoryWeaver, is a playground where children, parents, teachers and librarians can get creative. Come, start weaving today, and help us get a book in every child's hand!

This book is shared online by Free Kids Books at <https://www.freekidsbooks.org>
in terms of the creative commons license provided by the publisher or author.

Want to find more books like this?



<https://www.freekidsbooks.org>
Simply great free books -

Preschool, early grades, picture books, learning to read,
early chapter books, middle grade, young adult,
Pratham, Book Dash, Mustardseed, Open Equal Free, and many more!

Always Free – Always will be!

Legal Note:

This book is in CREATIVE COMMONS - Awesome!! That means you can share, reuse it, and in some cases republish it, but only in accordance with the terms of the applicable license (not all CCs are equal!), attribution must be provided, and any resulting work must be released in the same manner.

Please reach out and contact us if you want more information: <https://www.freekidsbooks.org/about>

Image Attribution: Annika Brandow, from You! Yes You! CC-BY-SA.

This page is added for identification.